दीर्घजीवी कछुआ

बिमल श्रीवास्तव

कछुए की पीठ जितनी कठोर होती है उतना ही वह दीर्घजीवी होता है। इसकी उम्र कुछ सौ सालों तक हो सकती है। किन्तु अधिकांश कछुए अपनी अधिकतम आयु सीमा तक पहुंचने से पहले ही मानव द्वारा अथवा कुछ अन्य प्राकृतिक शत्रुओं द्वारा बेमौत मार दिए जाते हैं।

दुनिया भर में कछुओं की लगभग 200 प्रजातियां पाई जाती हैं। इन्हें तीन मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है; भूमि पर रहने वाले कछुए, नदी, तालाब अथवा झील जैसे मीठे पानी में रहने वाले कछुए तथा खारे पानी यानी सागर में रहने वाले कछुए। ये बेर के आकार से लेकर एक बड़ी मोटरकार के आकार तक के हो सकते हैं।

कछुओं का अस्तित्व अत्यन्त प्राचीन है। एक अनुमान के अनुसार लगभग नौ करोड़ वर्षों से कछुए धरती पर विराजमान हैं। इस प्रकार से इन्हें डायनोसौर के समकालीन माना जा सकता है। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि इतने लम्बे अस्तित्व के बावजूद कछुओं के आकार, प्रकार तथा अन्य गुणों में बहुत कम परिवर्तन आया है।

कछुओं की प्रमुख विशेषता उनके शरीर को ढंकने वाला मज़बूत कवच है। हड्डियों का बना यह मज़बूत ढांचा वास्तव में उनकी पसलियों का विकसित रूप है। यह न केवल उनके मुलायम शरीर को ढंक लेता है, बल्कि शत्रुओं से उनकी रक्षा करने में भी सहायक होता है। कछुए अपना सर, पूंछ तथा पैर भी इस कवच के अन्दर छुपा लेते हैं।

समुद्री कछुओं में दिशा ज्ञान की प्रबल शक्ति होती है। वे दो से तीन वर्षों बाद भी अपने जन्म स्थान को पहचान कर वहां पहुंच सकते हैं। कई बार तो ये चार-पांच हज़ार किलोमीटर तक की दूरी तय करके भी अपने जन्म स्थान पर पहुंच जाते हैं। वैज्ञानिकों के लिए यह अबूझ पहेली अभी तक बनी हुई है कि वे ऐसा कैसे कर पाते हैं।

सागर तट पर पहुंचकर मादा कछुआ रेत में गड्ढा करके अण्डे देती है और फिर उसे रेत से ढंककर वापस चल देती है। बाद में अण्डों से निकले बच्चे अपनी अद्भुत दिशा आभास की शक्ति के सहारे वापस सागर की ओर चले जाते हैं।

कछुओं को सामान्यतः धीमी गति का प्रतीक माना जाता है। किन्तु बहुत कम लोग जानते हैं कि समुद्री कछुए बड़े तेज़ तैराक होते हैं और पानी में 24 कि.मी. प्रति घण्टे की रफ्तार से तैर सकते हैं। इस प्रकार उन्हें मैराथन दौड़ (42 कि.मी.) पूरा करने में केवल पौने दो घण्टे लगेंगे, जबकि इतनी दूरी को मैराथन धावक दो घण्टे से भी ज़्यादा समय में पूरा करते हैं। वास्तव में पानी में कछुओं की गति उनकी भूमि की गति से लगभग 75 गुना अधिक होती है।

कछुओं के आंसू

भले ही आंसू बहाने का जिक्र हो तो मगरमच्छ की बात आना अपरिहार्य है, लेकिन कछुए भी इसमें पीछे नहीं। समुद्री कछुए आंसू बहाकर अपने शरीर के अनावश्यक नमक को बाहर निकालते रहते हैं। ऐसा नहीं करने से नमक की अधिकता के कारण उनकी मृत्यु तक हो सकती है।

मादा कछुआ सागर तट के नज़दीक किसी एकान्त

समुद्री कछुओं में दिशा ज्ञान की प्रबल शक्ति होती है। वे दो से तीन वर्षों बाद भी अपने जन्म स्थान को पहचानकर वहां पहुंच सकते हैं। कई बार तो ये चार-पांच हज़ार किलोमीटर तक की दूरी तय करके भी अपने जन्म स्थान पर पहुंच जाते हैं। वैज्ञानिकों के लिए यह अभी तक एक अबूझ पहेली बनी हुई है कि वे ऐसा कैसे कर पाते हैं।